BA Part I (H)
Paper I

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धान्त (मैक्स वेबर) Theory of Stratification

मैक्स वेबर ने सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धान्त मार्क्स के एक आयामी स्तरीकरण को अस्वीकार करके बहुआयामी स्तरीकरण के आधार पर स्पष्ट किया है। मार्क्स ने वर्ग का निर्धारण यानि सामाजिक स्तरीकरण का निर्धारण आर्थिक संरचना करती है जबकि वेबर ने बहुआयामी वर्ग व्यवस्था या स्तरीकरण का प्रस्ताव रखा। मैक्स वेबर ने वर्ग, समूह प्रस्थिति तथा शक्ति के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण को स्पष्ट करने का प्रयास किया।

वर्ग ⇒ मैक्स वेबर के लिये स्तरीकरण और कुछ न होकर समाज में जो संगठित शक्ति निहित है उसकी अभिव्यक्ति मात्र है। वास्तव में किसी भी समाज का प्राण वायु उसकी शक्ति में निहित है। वेबर ने शक्ति को तीन कोटियों में बाटा है।

① आर्थिक शक्ति - यह हमें वर्ग में दिखती है।

② सामाजिक शक्ति - यह प्रस्थिति समूहों में देखने को मिलता है।

③ राजनीतिक शक्ति - प्रभुत्व मे निहित होती है। इस तरह

सामाजिक स्तरीकरण के तीन निश्चित आयाम हैं:- वर्ग, प्रस्थिति और शक्ति। ये तीनों ही आनुभाविक स्तर पर एक दूसरे से घुलेमिले होते हैं।

वेबर ने वर्ग की व्याख्या करते हुए कहा है, "वर्ग का सम्बन्ध लोगों के किसी भी एक ऐसे समूह से है जो एक सामान्य स्थिति में अर्थात् जीवन के एक अवसर में होते हैं और जिनकी एक सामान्य नियति होती है। यह सामान्य स्थिति और सामान्य नियति उनके आर्थिक वस्तुओं पर नियंत्रण करने या नियंत्रण न करने पर निर्भर होती है।" वेबर के वर्ग की सम्पूर्ण व्याख्या में तीन तथ्य सामने आते हैं –

① जीवन के अवसर (Life chances) ⇒ जीवन के अवसर से तात्पर्य जो वस्तुएं बाजार में उपलब्ध हैं, जो सेवाएं समाज में पाई जाती हैं, उनका लाभ कोई भी व्यक्ति ले सकता है या नहीं।

② आर्थिक हेतु (Economic Interest) ⇒ वह कारक जो वर्ग को बनाता है, निश्चित रूप से आर्थिक हेतु है और इन आर्थिक हेतुओं का सम्बन्ध बाजार के अस्तित्व में है।

③ बाजार की दशाएं (Market conditions) ⇒ जिस प्रकार आर्थिक हेतुओं का निर्धारण सामाजिक क्रिया करती है वैसे ही बाजार की दशाओं को भी सामाजिक क्रिया पक्का करती है।

प्रस्थिति समूह ⇒ मैक्स वेबर ने सामाजिक स्तरीकरण के सामाजिक आयाम में प्रस्थिति समूह को रखा है। जब सामाजिक क्षेत्र में शक्ति का विभाजन होता है तो यह सामाजिक प्रस्थिति या प्रतिष्ठा होती है। वे सभी व्यक्ति जिनकी प्रतिष्ठा और सम्मान का एक समान आकलन होता है और जो एक जैसी जीवन पद्धति को अपनाते है, प्रस्थिति समूह में सम्मिलित होते है। व्यक्ति की शक्ति का एक स्रोत उसकी प्रतिष्ठा भी होती है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा जितनी ऊँची होगी उतनी ही अधिक शक्ति उसके पास होगी। अपनी पुस्तक class, status and power में लिखते है, वर्ग के विपरीत प्रस्थिति समूह सामान्यतः समुदाय होते है। ये समूह प्रायः आधारहीन होते है, लेकिन प्रस्थिति के साथ जो सम्मान जुड़ा हुआ है उसे आनेवर्षे रूप से वर्ग के साथ नहीं जोड़ा जा सकता। इसके विपरीत सामान्य स्थिति में प्रस्थिति समूह वर्ग के विपरीत होते है।

शक्ति ⇒ सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त में वेबर ने शक्ति की अवधारणा को बहुत कम विकसित किया। वे शक्ति का अर्थ राजनीतिक शक्ति के रूप में -

लेते हैं। मैक्स वेबर के अनुसार, " सामाजिक सम्बन्धों में शक्ति का तात्पर्य उस प्रत्येक अवसर से है जिसमें अपने स्वयं की इच्छाओं को दूसरों के विरोध करने पर भी पूरा किया जा सके।"

जिस प्रकार वेबर ने यह कहा कि प्रस्थिति का अर्थ अनियमित है, उसी प्रकार वे यह भी कहते हैं कि शक्ति का अर्थ भी अनियमित है। वे कहते हैं कि शक्ति में प्राधिकार का होना आवश्यक नहीं है। जहां पर प्राधिकार होता है वहां शक्ति अनिवार्य रूप में होती है। प्राधिकार की बहुत बड़ी विशेषता वैधता है। यदि लोग या समुदाय किसी भी शक्ति को वैध मानते हैं तो शक्ति प्राधिकार बन जाती है।

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक स्तरीकरण में तीन आयाम वर्ग, प्रस्थिति समूह एवं शक्ति का होना आवश्यक है।